कविता

11

उड़ी पतंग

शिराली रूनवाल*

मृग-सी तेज़ कुलांचें भरती
आसमान में उड़ी पतंग,
कटते-लड़ते पेंच बचाती
राह बदल, जा मुड़ी पतंग।

लोहड़ी का त्यौहार मनाकर
सज-धज निकली कुड़ी पतंग,
माघी बीहू से पोंगल तक
उत्तर-दक्षिण जुड़ी पतंग।

गंगा-यमुना पार चली
चरखी से मांझा तुड़ी पतंग,
अरावली-गिरनार उलांघे...
विंध्याचल-सतपुड़ी पतंग।

सूरज को संदेसा देती
धरती-नभ की कड़ी पतंग,
कभी पेड़ की डाली से ही
अटकी, उलझी, अड़ी पतंग।

© NCERT not to be republished

*कवयित्री एवं साहित्यकार, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

गजक, रेवड़ी-सी मन भाए
खुशियों की फुलझड़ी पतंग,
गोल, तिकोनी या चौकोर—
छुटकी, मंझली, बड़ी पतंग।

नीलगगन की बगिया में
सूर्यमुखी... पंखुड़ी पतंग,
मकर-राशि की संक्रांति पर
कुरकुरी, तिल-गुड़ी पतंग।

© NCERT not to be republished